बाबा जी के संकेत

१ अक्टूबर, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

हर वर्ष, पूरे अक्टूबर माह के दौरान, श्रीगुरुमाई हमें प्रोत्साहित करती हैं कि हम बाबा जी की महासमाधि का उत्सव मनाते हुए उनके संकेतों के प्रति जागरूक हों; महासमाधि, वह समय है जब बाबा जी इस संसार का त्याग कर दिव्य परमात्मा में पूर्णतया विलीन हो गए थे। क्या हो सकता है, बाबा जी का एक संकेत? थोड़े-से दृढ़निश्चय और केन्द्रण के साथ देखें तो हम यह अनुभव कर सकते हैं कि यह संसार बाबा जी के संकेतों से *ओत-प्रोत* है! बाबा जी की कृपा इतने अनगिनत तरीक़ों द्वारा प्रकट हो सकती है कि यदि हम इस सुअवसर का पूरी तरह सदुपयोग करने पर ध्यान दें तो हम हर रोज़, पूरे दिन बाबा जी के संकेतों को देखते रह सकते हैं। इस तरह हम उनके प्रति जागरूक हो सकते हैं जो स्वयं अनन्तता के साथ, भगवान के साथ एक हो चुके हैं और जो हमारे जीवन में अपनी उपस्थिति व प्रेम को स्पष्ट रूप में महसूस भी कराते हैं। इस दिव्य विरोधाभास के बारे में अपनी समझ और अनुभव को गहरा बनाने के लिए मैंने यह कविता लिखी है :

आओ अब ज़रा धीरे चलें, और
जगह बनाएँ, उस प्रकाश के लिए
हृदय के लिए, इन सबमें स्पन्दित हो रही
उस प्रशान्तता के लिए।

वे जिनकी हम पूजा करते हैं, हमारे अन्दर हैं।
वे जिनकी हम पूजा करते हैं, हमारे बाहर हैं।
तो हम कहीं क्यों जाएँ?

बाबा जी के संकेतों के प्रति जागरूक होने का गुरुमाई जी का आमन्त्रण हमारे लिए खुशियों से भरी, एक आनन्दपूर्ण चुनौती है : जिस संसार को हम रोज़ देखते हैं, उसे एक नई दृष्टि से देखना और जिस भी परिस्थिती का हम सामना करते हैं, जिससे भी मिलते हैं, उसमें देदीप्यमान आत्मा को पहचानना। आप चाहें तो अक्टूबर भर अपने साथ एक छोटी-सी नोटबुक भी रख सकते हैं ताकि आप इसमें बाबा जी के उन सभी संकेतों के बारे में लिख सकें जिनका आप इस पूरे माह अनुभव करेंगे — सिद्धयोग पथ पर इस माह को बाबा जी का माह माना जाता है। मैं खुद ऐसा करने के बारे में सोच रहा हूँ और साथ ही मैं उन सुन्दर व दीप्तिमान क्षणों की तस्वीरें भी खीचूँगा जो मुझे उस समय दिखाई देंगी।

बाबा जी ने २ अक्टूबर, १९८२ की पूर्णिमा को महासमाधि ली और इसलिए हर वर्ष यह सौर पुण्यतिथि [पश्चिमी कैलेन्डर] के अनुसार २ अक्टूबर को और चान्द्र पुण्यतिथि [भारत के पंचांग] के अनुसार पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। वर्ष २०२० में, हम चन्द्रतिथि के अनुसार बाबा जी का महासमाधि दिवस ३१ अक्टूबर को मनाएँगे जब न केवल पूर्णिमा होगी बल्कि 'ब्लू मून' भी होगा यानि पश्चिमी कैलेन्डर के अनुसार एक ही महीने में दूसरी पूर्णिमा। पश्चिमी देशों में एक कहावत है *once in a blue moon [वन्स इन अ ब्लू मून]* जिसका उपयोग किसी दुर्लभ और साथ ही बहुमूल्य चीज़ का वर्णन करने के लिए किया जाता है; और ये शब्द निश्चित ही बाबा जी जैसी महान आत्मा के जीवन व उनकी कृपा को प्रतिबिम्बित करते हैं।

मेरे लिए उस आध्यात्मिक पुण्य की कल्पना कर पाना भी कठिन है जो ऐसा जीवन जीने के साथ जुड़ा है जैसा बाबा जी जीते थे—या जैसा गुरुमाई जी जीती हैं—ईश्वरसाक्षात्कार की अखण्ड अनुभूति में जीना और अन्य लोगों को भी इसी परमोच्च स्थिति तक ले जाने के एकमात्र उद्देश्य के साथ जीना। तथापि भारतीय परम्परा के अनुसार, जो भी ऐसे महान आत्मा की पुण्यतिथि पर उनका सम्मान करते हैं, उन्हें इन महान आत्माओं के पुण्य का कुछ अंश प्राप्त होता है। और इसीलिए हमें प्रोत्साहित किया जाता है कि हम इस पावन दिवस पर बाबा जी का स्मरण करें।

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के इस माह में, हममें से हरेक व्यक्ति यह चुन सकता है कि वह बाबा जी को कैसे याद करे। आप इस वर्ष बाबा जी का स्मरण कैसे करना चाहते हैं? बाबा जी की महासामधि से जुड़े सिद्धयोगियों द्वारा बताए गए अनुभवों को पढ़कर? गुरु-पूजा के अभ्यास का अन्वेषण करके? सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के लिए बढ़ते हुए चन्द्रमा की तस्वीरें लेकर? 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' के अनेक रागों में से किसी एक राग में बाबा जी के नाम का संकीर्तन करके?

वेबसाइट पर बाबा जी की महासमाधि के बारे में पढ़कर मुझे यह प्रेरणा मिली कि मैं मानसिक रूप से गुरुदेव सिद्धपीठ में स्थित बाबा जी के समाधि मन्दिर की तीर्थयात्रा करूँ। मेरे मन में बाबा जी के सान्निध्य का अनुभव करने की हार्दिक इच्छा थी; मैं उनके जीवनकाल में उनसे कभी नहीं मिला था और मैं उनके सान्निध्य में रहना चाहता था। मैं ध्यान करने बैठा और मन-ही-मन, मैंने गुरुदेव सिद्धपीठ के मुख्य कमल द्वार में प्रवेश किया। पहले मैं गुरुचौक में गया और वहाँ मैंने गुरुमाई जी के आसन के समक्ष प्रणाम किया। मैं कुछ देर वहाँ रुका रहा, अपने श्रीगुरु के सान्निध्य की प्रशान्ति व स्थिरता से सराबोर। फिर मैं समाधि मन्दिर की ओर गया, यह सोचकर कि वहाँ प्रवेश करते ही मुझे संगमरमर की बाबा जी की पावन समाधि के सम्मुख बनी वेदी पर सुशोभित उनकी पादुकाओं के दर्शन होंगे। किन्तु, मुझे तो वहाँ बाबा जी स्वयं खड़े हुए मिले, मानो वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हों। वे मेरी ओर देखकर खुशी से प्रेमपूर्वक मुस्कराए और मुझे अपने गले से लगा लिया। मेरे हृदय में कुछ

द्रवित हो उठा और मुझे अपने अन्दर से गहन प्रशान्ति और प्रेम के भाव उदित होते हुए महसूस हुए। यह विलक्षण भी था और अत्यन्त सहज भी। मुझे यह एहसास हुआ कि बाबा जी हमेशा ही मेरे साथ रहे हैं, सदा मेरा संरक्षण व मार्गदर्शन करते रहे हैं और जब भी मेरा हृदय मुझे उनकी ओर आकृष्ट करता है, मैं *बाबा जी के साथ* हो सकता हूँ। यह सिद्धयोग गुरुओं का अपने विद्यार्थियों के लिए कृपाप्रसाद ही है कि विद्यार्थी अपने हृदय में श्रीगुरु की शाश्वत उपस्थिति को अनुभव करते हैं।

क्या आपने कभी सोचा है, कृपा क्या *है?*

इस समय जब संसार असामान्य चुनौतियों से घिरा हुआ है, मैं कृपा के बारे में काफ़ी मनन-चिन्तन करता आ रहा हूँ—यह क्या है और यह हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करती है। सबसे अलौकिक रूप में इसे समझें तो कृपा की पावन शक्ति हमें उस दिव्यता के प्रति जाग्रत करती है जो हमारा सत्स्वरूप है और एक सीमित जीव होने के हमारे भाव को उस प्रकाश व सौन्दर्य के बोध में परिवर्तित कर देती है जो हमारे अपने अन्तर में, इस पूरे संसार में और हमारे आस-पास हरेक व्यक्ति में विद्यमान है। कितना अद्‌भुत है यह! शक्तिपात दीक्षा द्वारा—हमारे अन्दर दिव्य कुण्डलिनी शक्ति के जागरण द्वारा—श्रीगुरु हमें उस मार्ग पर अग्रसर करते हैं जिस पर चलकर हम इसके प्रति अधिकाधिक जागरूक होते जाते हैं कि भगवान का प्रकाश ही हमारा *अपना* प्रकाश है।

कृपा हमारे जीवन में छोटे-छोटे रूपों में भी प्रकट हो सकती है, अत्यन्त व्यक्तिगत व रहस्यमय तरीक़ों में— एक ऐसे पत्थर का दिखना जिसकी प्राकृतिक संरचना हृदयाकार की हो, सही समय पर एक ख़ुशीभरा चेहरा दिखना या मोरपंख के आकार के बादल का दिखना। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, हो सकता है कि इस पूरे माह के दौरान आपको बाबा जी के संकेतों को ढूँढ़ते रहने में मज़ा आए : प्रकृति में, अन्य लोगों में और सौन्दर्य व चमत्कारों में, ऐसे बड़े या छोटे संकेत जिनसे हमारा जीवन ओत-प्रोत है। ये सब दिव्य कृपा के प्रकट रूप हैं।

कृपा का एक सुन्दर स्वरूप जिसके बारे में मैं आपको बताना चाहूँगा, वह है सिद्धयोग पथ की वेबसाइट का पृष्ठ जिसका शीर्षक है 'दिव्य सूक्त'—कृपा के रंग जिनमें गुरुमाई जी, संक्षिप्त रूप में सिखावनियों का एक संकलन प्रदान करती हैं; इनमें से कुछ सिखावनियाँ संक्षिप्त में हैं और कुछ मात्र एक शब्द हैं। हर एक सिखावनी को प्रकृति की एक सुन्दर तस्वीर पर कलात्मक तरीक़े से प्रस्तुत किया गया है। मेरी तरह शायद आप भी एक ऐसी सिखावनी का चयन करने के लिए प्रोत्साहित हों जो आपको विशेषरूप से आकर्षित करे और जिस पृष्ठ को आप दिनभर अपने वेब ब्राउज़र पर खुला रखना चाहें ताकि आप उसकी सुन्दरता व उसमें समाहित प्रज्ञान पर बार-बार लौट सकें।

अक्टूबर का समय गुरुमाई जी द्वारा प्रदान किए गए नववर्ष-सन्देश पर हमारे मनन को आत्मसात् करने का और महादेवी की आराधना करने का भी सर्वोत्तम समय है।

श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश पर चिन्तन-मनन

सिद्धयोग साधना का एक सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, श्रीगुरु की सिखावनियों का अध्ययन करना, उन पर मनन-चिन्तन करना और उन्हें अपने जीवन में लागू करना। 'श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश पर चिन्तन-मनन' में सिद्धयोग विद्ययार्थी 'मधुर सरप्राइज़' से एक सिखावनी पर चिन्तन-मनन करने और उसे कार्यान्वित करने के अपने अनुभव बताते हैं। वर्ष २०२० में ये चिन्तन-मनन सितम्बर माह में वेबसाइट पर आना शुरू हुए। हरेक चिन्तन-मनन एक रत्न है; हरेक हमारे लिए एक प्रेरणा है जिसे हम अपनी साधना और अपने जीवन की परिस्थितियों में लागू करें। अक्टूबर माह में और भी चिन्तन-मनन आएँगे।

नवरात्रि और दशहरा : १७-२४ अक्टूबर [भारत में १७-२५] और २५ अक्टूबर

नवरात्रि, महादेवी और जगज्जननी, देवी भगवति के सम्मान में मनाया जाने वाला एक परम्परागत भारतीय उत्सव है। देवी भगवती, पराशक्ति के अपने सारस्वरूप में, संसार की रक्षा व उसके उत्थान के लिए अनेकानेक रूपों में अवतरित होती हैं।

भारत में वर्ष २०२० की नवरात्रि १७ अक्टूबर से लेकर २५ अक्टूबर के बीच मनाई जाएगी। सिद्धयोग पथ पर प्रथानुसार देवी के तीन स्वरूपों का लगातार तीन रातों तक पूजन-वन्दन किया जाता है : सर्वप्रथम महादुर्गा, फिर महालक्ष्मी और अन्त में महासरस्वती। विश्व के पश्चिमी भाग में इस वर्ष का महोत्सव १७ से लेकर २४ अक्टूबर के बीच मनाया जाएगा जिससे ये पारम्परिक नवरात्रि केवल आठ दिनों की होगी। किसी-किसी वर्ष ऐसा इसलिए होता है क्योंकि चन्द्रतिथि के अनुसार दो मंगलमय रात्रियाँ एक ही रात्रि पर पड़ती हैं। इसलिए इस वर्ष श्री मुक्तानन्द आश्रम में पहली दो रातें देवी महादुर्गा के सम्मान में होंगी। इन दो रातों में समस्त यथोचित पूजाएँ सम्पन्न की जाएँगी।

भारत में और विश्व के पश्चिमी भाग में दशहरा २५ अक्टूबर को है; दशहरा को विजयदशमी भी कहा जाता है यानी "दसवाँ दिवस" और "विजय दिवस।" भारत में यह दिन, वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से एक के रूप में मनाया जाता है। पवित्र शास्त्रग्रन्थों में यह बताया गया है कि यही वह महान दिवस है—अलग-अलग वर्षों और यहाँ तक की अलग-अलग युगों में—जब देवी ने महिषासुर को पराजित किया [देवी महात्मय], भगवान राम ने दशानन रावण को परास्त किया [रामायण] और पाण्डव राजकुमार बारह वर्षों के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद अपने

निवासस्थान वापस आए [महाभारत]। इसलिए दशहरा कई स्वरूपों में, अन्धकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है।

स्वाध्याय अध्ययन-सत्र

जैसा कि आप जानते होंगे, स्वाध्याय अध्ययन-सत्र साप्ताहिक रूप से शनिवार को सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित हो रहे हैं। संस्कृत शब्द 'स्वाध्याय' का शाब्दिक अर्थ है "आत्म-अध्ययन" यानी स्वयं अपना अध्ययन और—जैसा कि अध्ययन-सत्रों के प्रबन्ध निदेशक, स्वामी अखण्डानन्द ने स्वाध्याय के परिचय, "स्वाध्याय क्या है?" में बताया था—यह "आत्मा का अध्ययन" भी है। स्वाध्याय का अर्थ है, आदिकाल से पूजनीय, पावन स्तोत्रपाठों का अभ्यास करना। इन अध्ययन-सत्रों में हमें विशेष दिशानिर्देश मिल रहे हैं कि हम श्रीगुरुगीता का पाठ किस प्रकार करें ताकि जागरूकतापूर्वक किए गए स्वाध्याय का हमारा अभ्यास, हमें दिव्य आत्मा की समझ और अनुभव तक लाने में और भी अधिक कारगर सिद्ध हो।

पहले सत्र में स्वामी अखण्डानन्द ने स्वाध्याय के विस्तृत अर्थ के बारे में बताया और उस सप्ताह के केन्द्रण के लिए विशेष विषय-वस्तु का भी परिचय दिया : सिद्धयोग पथ पर मिलने वाले अध्ययन के अनेक अवसरों का परिचय। स्वाध्याय अध्ययन-सत्र २ में स्वामी जी ने ज़मीन अथवा कुर्सी पर बैठकर पाठ करने के उपयुक्त आसन के बारे में विस्तार से निर्देश दिए। फिर उन्होंने हमें आध्यात्मिक अभ्यास के लिए अपने व्यक्तिगत अभिकथन लिखने को कहा। उन्होंने हमें ये अभिकथन, भगवान के साथ ऐक्य के उन समयातीत कथनों के अनुरूप लिखने को कहे जो भारत के वैदिक ऋषि-मुनियों ने दिए हैं। "बर" महीनों में गहरे उतरते हुए यानी अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर महीनों में प्रवेश करते हुए—उत्तरी गोलार्ध में इन्हें हममें से कुछ लोग "बररर" यानी ठण्ड के महीनों के रूप में सोचते हैं—हम सिद्धयोग अध्ययन के एक प्रेरणादायक व मौलिक समय में प्रवेश कर रहे हैं।

***

मेरे विचार में बाबा जी के जीवन की सबसे महान धरोहर वह सिखावनी है जिसे श्री मुक्तानन्द आश्रम के प्रवेश द्वार के ऊपर इन शब्दों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है : *God Dwells Within You as You [आपका राम, आपमें आप होकर रहता है]*। हाल ही में एक मित्र जो मेरी पत्नी और मुझसे मिलने आई थीं, वे बीस से भी अधिक वर्ष पूर्व के आश्रम आने के अपने अनुभव के बारे में बताने लगीं। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने आश्रम के प्रवेश द्वार के मेहराब पर बाबा जी के ये शब्द देखे तो उनके अन्दर खुशी का सैलाब उमड़ पड़ा, इस दृढ़ विश्वास के साथ कि भगवान *सच में* उनके अन्दर रहते हैं, उन्हीं के रूप में। ये महिला एक न्यूरोसाइन्टिस्ट हैं—ऐसी व्यक्ति जो मस्तिष्क का अध्ययन करती है—और उनके अपने दिमाग़ में क्या चलता है, वे इस बारे में काफ़ी सतर्क रहती हैं। वे चकित

रह गईं कि किस प्रकार बाबा जी की सिखावनी ने लम्बे समय से बनी उनकी इस भावना को मिटा दिया कि वे पापी हैं और उसके स्थान पर उन्हें प्रशान्ति और पूर्णता के गहरे भावों से भर दिया।

यद्यपि उन लोगों की गिनती कर पाना सम्भव नहीं है जिनके जीवन को बाबा जी और गुरुमाई जी की सिखावनियों ने इसी तरह छुआ है, फिर भी मुझे एक हरे-भरे बगीचे की कल्पना करना अच्छा लगता है जो किसी प्रकार से पूरे विश्व में फैल गया है और जिसने अनेकानेक लोगों के जीवन व हृदयों में अपनी जड़ें मज़बूती से जमा ली हैं। मैं इसे सिद्धयोग पथ की धरोहर के मुख्य तत्त्व के रूप में देखता हूँ। इस माह बाबा जी की महासमाधि का उत्सव मनाते हुए हम अपने व्यक्तिगत रूपान्तरण के बारे में मनन-चिन्तन कर सकते हैं और साथ ही इस बारे में विचार कर सकते हैं कि यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम आने वाली पीढ़ियों के हित के लिए सिद्धयोग पथ की धरोहर में योगदान दें।

आदर सहित,
पॉल हॉकवुड

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।